Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 9 | ISSUE : 5 | MAY 2023

जैविक खेती से वर्तमान एवं भविश्य की सुरक्षा

डॉ. प्रेम परिहार [1]

[1] सहायक आचार्य, ईएएफएम, राजकीय वाणिज्य महाविद्यालय सीकर, राजस्थान (भारत)

ABSTRACT:

KEYWORDS:

आदिकाल से ही मानव खेती के प्रति जागरूक रहा है। उस समय स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप ही खेती की जाती थी जिसमें जैविक एवं अजैविक पदार्थों के बीच आदान–प्रदान का चक्र एवं क्रम निरन्तर चलता रहता था। इसके कारण जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। बदलत परिवे”ा में गौव”ा का प्रयोग कम होने लगा है और खती में अनेक प्रकार के कीटना”ाकों का अनियंत्रित प्रयोग होने से जैविक एवं अजैविक पदार्थों का चक्र बदलता जा रहा है। जिससे वातावरण में अ”ाुद्धता बढ़ती जा रही है। ओजोन परत का क्षरण हो रहा है। अब मौसम और ऋतु परिवर्तन भी सामान्य नहीं रहा है।

कृषि एक प्राथमिक क्रिया है जिसमें फसलों, फलों, सब्जियों, फूलों का उगााना, बागवानी एवं प”ाुपालन की क्रिया को भी शामिल किया जाता है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार वि”व के 60 प्रति”ात व्यक्ति कषि एवं कृषि से संबंधित गतिविधियों पर जीवनयापन करते है। आर्थिक सर्वेक्षण 2022–23 के अनुसार भारत की लगभग 65 प्रति”ात जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में रहतो ह जिनमें से 47 प्रति”ात जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। इसी कारण कृषि को भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ माना गया है। इस सर्वेक्षण के अनुसार छिले 6 वर्षो में कृषि क्षेत्र की औसत वार्षिक वृद्धि 4.6 प्रति”ात रही है। हरित क्रांति के दौरान सिचांई एवं उर्वरकों के अधिक प्रयोग से जलस्तर में कमी एवं भूमि की उर्वरा क्षमता भी प्रभावित हुई है। अब सामान्यजन कीटना”ाकों से मुक्त आहार के प्रति जागरूक हुआ है। इसलिए अब पुनः परम्परागत खेती की ओर रूख किया जा रहा है। हरित क्रांति के दुष्प्रभावों से बचने के लिए सतत् कृषि एवं जैविक खेती की ओर ध्यान दिया जाने लगा है। जैविक कृषि को रसायनमुक्त खेती के पर्याय के रूप में भी जाना जाता है। खेती के इस दृष्टिकोण को जापानी किसान और दा”ानिक **मासानोबू फुकुओका** ने 1975 में अपनी पुस्तक **द वन स्ट्रा रेवोल्यूशन** में बताया ळें

1990 के द”ाक में पर्यावरण संरक्षण की भावना ने जैविक खेती के महत्व को बढ़ाया है। सर्वप्रथम जैविक खेती के नाम का पयोग लार्ड नार्थबोर्न ने किया जिन्हें जैविक खेती का नामकरण करने का श्रेय दिया जाता है। इस शब्द की व्युत्पत्ति खेती (जीवित) जीव की तरह की अवधारणा से हुई। जिसका विस्तार से वर्णन उन्होंने 1940 में लिखित पुस्तक **लुक टू लैण्ड** में किया है। पुस्तक में बताया है कि जैविक खेती समग्रता और पर्यावरण का संतुलित मिश्रण है। **कोडेक्स एलिमेंटेरियस** के अनुसार जैविक खेती एक समग्रतात्मक उत्पादन प्रबंध व्यवस्था है जो खेती पारिस्थितिकी तंत्र के साथ ही जैव विविधता, जैविक चक्र एवं मृदा जैविक क्रियाकलाप की मजबूती को प्रोत्साहित करने के साथ उसे बढ़ाती है। इसमें इस बात का ध्यान रखा जाता है कि क्षेत्रीय स्थितियाँ स्थानीय रूप से अपनायी गई विधियों को ही पसंद करती है। यह खेती में उपलब्ध निवे”ाों की तुलना में प्रबंधन अभ्यासों पर अधिक बल देती है। जहाँ तक संभव हो कृत्रिम वस्तुओं के स्थान पर सांस्कृतिक, जैविक एवं यांत्रिक विधियों को अपनाकर इसमें सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार **जैविक खेती गतिविधियों के अंतराष्ट्रीय संगठन** के अनुसार जैविक खेती वह पद्धति है जो खाद्यान्न, तंतु एवं काष्ठ उत्पादन, समृद्ध पर्यावरण एवं मजबूत अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करती है। इस पद्वति में मृदा की उर्वरता को सफल उत्पादन की कुँजी माना जाता है। वनस्पतियों, प”ाुओं एवं खेत का कार्य करते हुए जैविक खेती करने वाले किसान का उद्दे”य खेती एवं पर्यावरण के सभी पहलुओं के गुणों को अनुकूलतम बनाना है। एक अन्य परिभाषा में **द यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ एग्रीकल्चर** के अनुसार जैविक खेती एक पारिस्थितिकी उत्पादन पद्धति है जो जैवविधिता, जैविक चक्र एवं मृदा जैविक क्रियाकलाप को प्रोत्साहित एवं समृद्ध करती है। यह कृषि क्षेत्रों के बाहर की वस्तुओं के कम से कम निवे”ा पर आधारित है और उन प्रबंधन अभ्यासों पर अधिक निर्भर होती है जो पारिस्थितिकी सद्भावना का संरक्षण, अनुरक्षण एवं उसे समृद्ध करें।

सामान्यतया जैविक खेती की परिभाषा को **यूरोपिय संसद ब्रुसेल्स** के अधिनियम 27 अप्रैल 2018 के अनुसार इस प्रकार समझ सकते है जिसके अनुसार जैविक खेती खेती क प्रबंध और खाद्य उत्पादन की एक समग्र प्रणाली है जो सबसे अच्छे पर्यावरणीय और जलवायु गतिविधि के अभ्यासों, उच्च स्तर की जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, प”ाु कल्याण के उच्च मानकों का प्रयोग एवं प्राकृतिक पदार्थों और प्रक्रियाओं के प्रयोग से उत्पादित उत्पादों के लिए उपभोक्ताओं की बढ़ती हुई संख्या के माँग के अनुरूप उच्च उत्पादन मानक शामिल करती है। अर्थात् जैविक खेती में किसान अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में खेती के संदर्भ में पर्यावरण अनुकूल तकनीकों के प्रयोग पर जोर देता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जैविक शब्द केवल प्रयुक्त होने वाली सामग्रियों जैसे उर्वरक, अधिक उपज देने वाली किस्मों, श्रम आदि से ही प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़ा बल्कि यह खेती को एक जीवित जीव की तरह देखता है। जिसमें सभी सहायक कारकों जैसे मृदा, सूक्ष्म जीव, जीवित प्राणी, पादप, प”ाु एवं मनुष्य आपस में मिलकर क्रियाकलाप कर पौधें एवं प”ाुओं हेतु एक स्वस्थ पर्यावरण का निर्माण करते हैं ताकि मानव के लिए स्वास्थ्यप्रद भोजन का उत्पादन किया जा सके।

सामान्य रूप से जैविक खेती कुछ सिद्धान्तों/तथ्यों पर निर्भर करती है जो इस प्रकार है–

1. यह खेती मिट्टी, पौधों, प”ाुओं और मनुष्य के लिए स्वास्थ्य वर्द्धक होनी चाहिए।
2. यह भावी एवं वर्तमान पीढ़ी के लिए कल्याणकारी होनी चाहिए।
3. यह सजीव पारिस्थितिकी प्रणालियों एवं चक्रों पर आधारित होनी चाहिए और उसी के अनुरूप काम करने वाली होनी चाहिए।
4. इसमें पर्यावरण और जीवन की प्रक्रियाओं के संबंध में न्यायसंगतता होनी चाहिए।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. जैविक खेती को जानना।
2. जैविक खेती के सिद्धान्तों को जानना।
3. जैविक खेती की उपयोगिता को जानना।

भाोध विधिः–

इस अध्ययन हेतु वि”लेषणात्मक एवं तुलनात्मक विधि का उपयोग किया गया है। जैविक खेती की जानकारी हेतु कृषि विभाग, सांख्यिकी विभाग, प”ाुपालन विभाग आदि से द्वितीयक आकडों का संकलन किया गया है।

भाोध समीक्षाः–

अनिता माथुर 2011 ने अपने शोध पत्र **जैविक कृशि के पर्यावरणीय महत्व का भौगोलिक अध्ययन** में बताया है कि पर्यावरण की चुनौतियों का सामना करने के लिए वि”व को जैविक खेती की आव”यकता है। जैविक खेती में प्रारम्भ में आर्थिक लाभ

कम होने के कारण किसान इसको अपनाने से डरते ह। इसके लिए किसानों को प्रेरित करना चाहिए। उन्हें जैविक खेती के बारे में जागरूक करना चाहिए ताकि वे परम्परागत खेती के तरीकों में वि"ोषज्ञता हासिल कर सके। दे"ा में जैविक खेती की अपार संभावनाएँ ह और जैविक खेती के प्रमाणन के लिए अभी ओर अधिक शोध की आव"यकता है।

खडागले अभिशेक, डा. आहेर भागवत राव सतीश एवं यशोना धर्मेंद्र सिंह 2019 न **कृशि पहल पत्रिका** में बताया है कि रासायनिक खादों, जहरीले कीटना"ाकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों का प्रयोग कर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। जिससे जल, वायु और भूमि शुद्ध रहती है। इससे प्रत्येक जीवधारी का स्वास्थ्य भो उत्तम बना रहता है। सरकार जैविक खेती के प्रचार–प्रसार का काम कर रही है। राज्यों और जिलों में चलित झांकी, पोस्टर, बैनर्स, साहित्य, एकल नाटक, कठपुतली प्रद"ान, जैविक हाट और वि"ोषज्ञों द्वारा जैविक खेती पर उद्बोधन आदि के माध्यम से किसानों में जन जागृति फलाने का काम सरकार द्वारा किया जा रहा है। सरकार द्वारा जैविक खादों के लिए अनुदान एवं अन्य सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। राज्यों में कम्पोस्ट खाद तैयार करने के लिए ि"ाक्षण–प्र"िाक्षण प्रदान किया जा रहा है।

सामान्य खेती में कीटना"ाकों एवं उर्वरकों के उपयोग से पैदावार में वृद्धि होती है जो किसानों को आकृषित करती है। जैविक खेती के लिए किसानों की आ"ांकाओं का निम्नानुसार समाधान किया जा सकता है:–

समाधान:–

1. खेती सबंधित नवीन तकनीकों का प्रचार–प्रसार करना।
2. जैविक खेती से सफल हुए किसानों से भेटवार्ताओं एवं गोष्ठियों का आयोजन करवाना।
3. जैविक खंती के उत्पादों का बाजारीकरण आसानी से किया जा सके इसके लिए सरकार को जैविक उत्पादों का प्रमाणीकरण करना चाहिए।
4. जैविक खेती में रोजगार के अवसरों का विकास करना चाहिए।
5. कृषि भूमि में लगातार कमी होने के कारण जैविक खेती से अधिक उत्पादन करने वाली विधियों का विकास करना चाहिए।

राजस्थान में जैविक खेती:–

राजस्थान में आजीविका के रूप में 62 प्रति"ात आबादी कृषि पर ही निर्भर रहती है जो राज्य की अर्थव्यवस्था को पोषित करती है। राज्य में कृषि एवं इससे संबंधित समस्याओं की जाँच एवं समीक्षा के लिए वर्ष 2007 में **किसान आयोग** का गठन किया गया है, जिसका प्रमुख कार्य किसानों, प"ापालकों एवं कृषि मजदूरों की समस्याओं का समाधान करना है। राज्य में कृषि नीति 16 जून 2013 को लागू की गई जबकि कृषि प्रसंस्करण एवं कृषि विपणन नीति 5 नवंबर 2015 में लागू की गई। 7 फरवरी 2017 को झालावाड में जैविक खेती अनुसंधान केंद्र स्थापित किया गया। राज्य की पहली जैविक मंडी डुगरपुर में खोली गई है। राज्य में बागवानी फसलों में जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु लागत का 50 प्रति"ात अधिकतम 10,000 रूपए प्रति हैक्टेयर प्रति लाभार्थी अधिकतम 4 हैक्टेयर अनुदान देय होता है। जो 40:30:30 के अनुपात में क्रम"ा: तीन वर्षों में दिया जाता है। इसमें जैविक खेती एवं जैविक गाँव के किसानों को प्राथमिकता प्रदान की जाती है। राजस्थान में जैविक खती को बढ़ावा देने के लिए **राज किसान जैविक मोबाइल एप** सुविधा प्रदान करता है। इससे क्रता–विक्रता का कार्य आसान हो जाता है। इसी तरह राजस्थान राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था में 90 जैविक उत्पाद समूह पंजीकृत है जिसमें 20,000 से अधिक जैविक किसान जुड़े हुए ह। इसी तरह राजस्थान में जैविक खेती को बढावा देने के लिए जैविक कृषि नीति सिक्किम राज्य की तर्ज पर तैयार की है। इस नीति में अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन लक्ष्य तैयार किए गए है। इस नीति में रासायनिक वस्तुओं पर नियंत्रण, जैविक उत्पादों को आव"यक प्रोत्साहन हेतु संरचनाओं एवं संसाधनों के निर्माण पर जोर दिया गया है। राज्य में जैविक खेती मि"ान में बजट 2022–23 में आगामी 3 वर्षों में 4 लाख किसानों को लाभांवित किया जाएगा। इसके लिए 60 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। ऐसे ही वर्ष 2019–20 में **खेती में जान तो स"ाक्त किसान** की सोच के साथ जीरो बजट प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की घोषणा की गई। इस वर्ष इसे राज्य के टोंक, सिरोही एव बांसवाड़ा में लागू किया गया। इस योजना को वर्ष 2020–21 में 15 जिलों में विस्तार किया गया। वर्तमान में इसका सभी जिलों में प्रसार है। बजट 2023–24 में जैविक उत्पादों का बाजारीकरण एवं प्रमाणीकरण को दक्षता एवं समय पर पूर्ण करने के लिए जैविक उत्पाद बोर्ड का सहयोग करने के लिए जिला स्तरीय प्रमाणीकरण इकाईयों एवं परीक्षण प्रयोग"ालाओं की स्थापना की जाएगी। 50,000 किसानों को जैविक खेती हेतु प्रति किसान 5,000 रूपए की इनपुट सब्सिडी प्रदान की जाएगी। जयपुर एवं जोधपुर में 100 करोड़ रूपए की लागत से **जैविक उत्पाद मार्ट** स्थापित किए जाएंगें।

महत्व:–

जैविक खेती से बेहतर स्वास्थ्य युक्त भोजन एवं उत्पादों का उपभोग होता है। इससे रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। पर्यावरण की सुरक्षा होती है। जल की खपत कम होती है। इससे प्रति बूँद फसल की मात्रा को अनुकूलन करने की क्षमता होती है। यह मृदा के स्वास्थ्य को पुर्नजीवित करती है जो सतत् कृषि विकास की अवधारणा के अनुकूल है। इसके माध्यम से मौसम चक्र पर नियंत्रण किया जा सकता है। फसलों को सूखे, बाढ़, गर्मी आदि से सुरक्षित किया जा सकता है। पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए वि"व को जैविक खेती की आव"यकता है। परन्तु अनेक कारणों से जैविक खेती की आय प्रभावित हो रही है जिनमें अपर्याप्त ऋण सुविधाएँ, सिंचाई सुविधाओं में कमी, कृषि उपज की कम कीमत आदि है जिनका समाधान समय रहते किया जाना आव"यक है।

निष्कर्श:–

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वास्थ्य ही सबसे बड़ी पूँजी है और स्वस्थ रहने के लिए यह आव"यक है कि हम शुद्ध भोजन करें। शुद्ध भोजन प्राकृतिक तरीके से तैयार की गई फसल से ही संभव है। यह सब जैविक खेती से ही संभव है। यही वह सर्वश्रेष्ठ तरीका है जिससे हमें रासायनों के उपयोग के बिना शुद्ध पौष्टिक भोजन प्राप्त हो सकता है जो पर्यारण संरक्षण का मुख्य आधार भी है। इसमें फसलों की रक्षा के रूप में अधिका"ातया जालों और प्राकतिक ि"ाकारियों का प्रयोग किया जाता है। जैविक उत्पाद महँगें परन्तु स्वास्थ्यवर्द्धक होते हैं और यही वर्तमान की आव"यकता है कि स्वास्थ्यवर्द्धक आहार का प्रयोग किया जाए।

REFERENCES

1. सांख्यिकी विभाग, आर्थिक एवं साख्यिकी निदे"ालय, राजस्थान
2. माथुर अनिता, जैविक कृषि के पर्यावरणीय महत्व का भौगोलिक अध्ययन, जर्नल ऑफ एडवांस एण्ड स्कोलरली रिसर्च इन एलाइड एज्यूके"ान, मल्टी डिसिप्लेनरी एकेडमिक रिसर्च, वोल्यूम 2, इ"यू 2, अक्टूबर 2011, पृष्ठ संख्या 1–7
3. राजस्थान आर्थिक समीक्षा 2020–21
4. आर्थिक समीक्षा 2022–23 भारत सरकार
5. खडागले अभिषेक, डॉ. आहेर भागवत राव सती"ा एवं य"ोना धर्मेंद्र सिंह, कृषि पहल पत्रिका, भोपाल, 2019, पृष्ठ संख्या 20–22
6. कषि गोल्ड लाइन, खेती–बाड.ी, 1–15 अप्रैल 2015, पृष्ठ संख्या 4
7. रेड्डी एस. आर., प्रींसीपल ऑफ ऑरगनिक फार्मिग, कल्याणी पब्लि"ार्स, 2020